"मध्यकालीन शासकों के संरक्षण में शिक्षा का स्वरुप" एक विवेचनात्मक अध्ययन

*डॉ. टी.सी. बैरवा

भारतवर्ष प्राचीनकाल से ही सभ्यता – संस्कृति के क्षेत्र में अपने उत्कर्ष काल में रहा। ऐतिहासिक साक्ष्यों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि जब–जब भी यहॉ बाहरी जातियों ने आधिपत्य किया, उन्होंने नवीन शिक्षा संस्कृति का प्रचार प्रसार करने का साझा प्रयास किया। ब्रिटिश कालीन भारत में भी ऐसे नवाचार प्रारम्भ हुये। मुसलमानों ने भी प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली के स्थान पर अपने ढंग से शिक्षा प्रणाली करने की शुरुआत की। सर्वप्रथम इस्लामी शिक्षा का लक्ष्य मुसलमानों में ज्ञान की वृद्धि करना था। पैगम्बर मुहम्मद साहब के अनुसार ज्ञान प्राप्त करना एक कर्तव्य है और इसके बिना उसको मुक्ति नहीं मिल पाती।[1] इस्लामी शिक्षा का दूसरा लक्ष्य इस्लाम का प्रसार करना था। यह एक धार्मिक कर्तव्य समझा जाता था। भारत में इस्लाम का प्रसार शिक्षा के माध्यम से किया गया। मकतबों में बच्चों को प्रारम्भ से कुरान पढ़ाई जाती थी, जिससे उन्हें इस्लाम के मूल सिद्धान्तों के विषय में जानकारी हो सके।[2] शिक्षा का तीसरा लक्ष्य इस्लामी सिद्धान्तों के अनुसार सदाचार की एक विशिष्ट प्रणाली का विकास करना था। चौथा लक्ष्य भौतिक सुख की प्राप्ति था।

सल्तनत काल में शिक्षा :– मुसलमानों के आक्रमण के समय भारत में कुछ भाग में बौद्ध शिक्षा प्रणाली प्रचलित थी। कुतुबुद्दीन ऐबक ने शिक्षा के क्षेत्र में विकास तो किया, साथ ही परम्परागत् शिक्षा व्यवस्था को भंग करवाया। ऐबक के सेनानायक मलिक बख्तियारुद्दीन खिलजी ने पहले तो हिन्दु मंदिरों एवं विद्यालयों को नष्ट करवाया। उसने बिहार में बौद्ध शिक्षा प्रणाली को नष्ट किया साथ ही मदरसों का निर्माण करवाया।[3]

इल्तुतमिश पहला सुल्तान था, जिसने दिल्ली में एक मदरसा स्थापित किया और उसका नाम मुहजुद्दीन मुहम्मद गौरी के नाम पर 'मदरसे मुइजी रखा'।[4] शिक्षा के क्षेत्र में नासिरुद्दीन का नाम उल्लेखनीय है। वह स्वयं एक अच्छा लेखक था, गौरतलब यह है कि वह अपनी जीविका लेखन से प्राप्त आमदली से चलाता था। समकालीन लेखक बर्नी ने एक सूची में विशिष्ट विद्वानों का उल्लेख किया है। जिन्होंने दिल्ली के मदरसों में अध्यापन का कार्य किया था। मंगोलों के आक्रमण के समय बहुत से विद्वानों और कलाकारों ने दिल्ली में शरण ली और वहॉ के सांस्कृतिक जीवन को गौरवमय बनाया। इस समय के प्रसिद्ध विद्वानों की सूची में शम्शुद्दीन ख्वारिज्मी, बुरहानुद्दीन बजाज, नजमुद्दीन दमिश्की और कलालुद्दीन जाहिद है।[5] खिलजी शासकों ने प्रशासन एवं सैन्य नीति को मजबूत बनाया, कारणवश शिक्षा के क्षेत्र में वे कोई उल्लेखनीय प्रदर्शन नहीं कर पायें। हॉलाकि बरनी कहते है कि अल्लाउद्दीन के समय भी कई विद्वानों का दल विदेशों से आया और राजधानी दिल्ली में निवास करने लगे। फरिश्ता के अनुसार अल्लाउद्दीन के समय 45 विद्वान भिन्न विश्वविद्यालयों में जो विज्ञान और कलाओं में पारगंत थे।[6] अमीर अर्सलान उस काल का प्रसिद्ध इतिहासकार था। कबीरुद्दीन ने अपना प्रसिद्ध ग्रंथ – 'फतहनामा' इसी काल में लिखा था।[7] तुगलक वंश के सुल्तानों ने भी शिक्षा के महत्व को समझा। ग्यासुद्दीन एवं मुहम्मद तुगलक स्वयं विद्वान थे एवं विद्वानों को प्रोत्साहन दिया। फरिश्ता लिखते है कि मुहम्मद तुगलक के हरम में बहुत देशों की स्त्रियॉ थी, जिनमें अरेबियन, जार्जियन, तुर्क, चीनी, अफगानी, राजपूत, बंगाली, तेलंगाना थी, वह उन सब से उनकी भाषा में वार्तालाप कर सकता था।[8] फिरोज, तुगलक ने विद्वानों का सम्यक् सम्मान करने के उद्देश्य से 'अंगूरी महल' का निर्माण करवाया था। उसने दान एवं पेशंनों के लिए 36 लाख रुपयें खर्च किये थे। वह पुरातत्व प्रेमी भी था, पुरातात्विक संरक्षण के महत्व को समझते हुए उसने अशोक स्तम्भ जालंधर से दिल्ली इसी उद्देश्य से मंगवाया था। फिरोज तुगलक ने 1,80,000 गुलामों को शिक्षित किया।[9] इससे पता चलता है कि उसके

शासनकाल में शिक्षा का बहुत विकास हुआ। जियाउद्दीन बर्नी ओर शम्श सीराज अफीफ ने उसके संरक्षण में ग्रन्थ लिखे। फिरोज स्वयं एक इतिहासकार था। उसने अपनी आत्मकथा 'फतूहाते फिरोजशाही' लिखी। उसके पास संस्कृत की बहुमूल्य पुस्तकों का अमूल्य भंडार था।[10] सिकन्दर लोदी ने शिक्षा के प्रसार के लिए अनेक उपाय किये। उसने चिकित्साशास्त्र पर एक महत्वपूर्ण ग्रंथ (तिब्बे सिकन्दर शाही) तैयार करवाया, जो भारत और खुरासान के अनुभवी चिकित्सको के सहयोग से पूरा करवाया।[11]

मुगलकाल में शिक्षा :– मुगलकाल में कलाओं की पर्याप्त उन्नति हुई। उनके साथ ही शिक्षा का भी पर्याप्त प्रसार हुआ। मुगल शासकों ने अलग से तो शिक्षा विभाग की स्थापना तो नहीं की परन्तु राज्य की और से अनेक महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रयास किये। बाबर स्वयं एक विद्वान और कवि था। उसकी आत्मकथा 'बाबरनामा' एक अद्वितीय ग्रंथ है।[12] बाबर को कई भाषाओं की जानकारी थी, जिसमें अरबी, फारसी और तुर्की थी। उसने 'शेख मजीद' और अपनी नानी 'इंसान दौलत बैगम' से बहुत कुछ सीखा। बाबर के दरबार में खोंदमीर, और 'शेख जैन ख्वाफी प्रमुख थे।[13] बाबर विद्वानों को प्रोत्साहित करने के लिए विद्वानों को पुरस्कार भी देता था। इनमें ख्वादमीर, मौलाना शहाबुद्दीन, और हिरात के मिर्जा इब्राहीम का नाम उल्लेखनीय है। बाबर ने पंजाब के अमीर गाजाखॉ के पुस्तकालय को अपने नियंत्रण में करके उसकी बहुमूल्य पुस्तकें अपने पुत्र 'हूमायूँ' और 'कामरान' को भेजी थी।

हूमायूँ ने शिक्षा के क्षेत्र में बाबर से ज्यादा उल्लेखनीय कार्य किये। वह भी शिक्षा प्रेमी और विद्वानों का सरंक्षक था। उसकी भूगोल और खगोल विद्या में विशेष रुचि थी। नक्षत्रों के संदर्भ में स्वयं ने अनेक लेख भी लिखे। हॉलाकि वह स्वयं पढ़ा लिखा नहीं था। उसने सरकार की तरफ से वजीफें एवं जागीरें दी। उसने अबुल फजल की सहायता से शिक्षा के विस्तार के लिए पाठ्यक्रम और नियमावली बनायी। उसे परम्परागत् शिक्षा प्रणाली में आवश्यक सुधार किए। इस संदर्भ में राजकीय आदेश भी निभाये।[14]

हूमायूँ सप्ताह में दो दिन बृहस्पतिवार, और शनिवार को विद्वानों से विशेष भेंट आयोजन करता था। उसका हुक्का भरने वाले जैसे लोगों में भी तो विद्यानुराग था। उसका हुक्का भरने वाले जौहर ने 'तजकिरातुल' वाकियात नामक ग्रंथ की रचना की। उसे पुस्तकों को विशेष रुप अनुराग था। युद्ध क्षेत्र में भी पुस्तकालय ले जाया करता था। अकबर मुगलसम्राटों में अत्यधिक प्रसिद्ध रहा। अकबर की शिक्षा नीति को उस समय के एक बड़े विद्वान फाथुल्ला शीराजी ने प्रभावित किया।[15] शीराजी अनेक विषय का ज्ञाता था, परन्तु उसने दर्शनशास्त्र और मकूलात में विशेष योग्यता प्राप्त की थी। तकनीकी शिक्षा के विकास में उसका बड़ा योगदान था। उसने बड़ी बन्दूक और तोप बनाने में लोहे को पक्का करकेउसका उपयोग किया। उसके द्वारा तकनीकी शिक्षा में नये प्रयोग किये। जेसुइट पादरी मांसरेट ने इन कारखानों की प्रशंसा की।[16] अकबर के समय में पाठ्यक्रम संबंधी कमियों को दूर करने का प्रयत्न किया और कुछ नवीन विषयों का समावेश हुआ।[17] अकबर शिक्षा का महत्व समझता था। उसने अपने पुत्र – पौत्रों को अच्छी शिक्षा दिलाने के उद्देश्य से उच्चकोटि के विद्वान नियुक्त किए थे। – 'सलीम' को पढ़ाने के लिए कुतुबुद्दीन खॉ और अब्दुल रहीम मिर्जा, मुराद के लिए फौजी और शरीफ खॉ, दानियाल के लिए एक ईसाई पादरी नियुक्त किये थे। अकबर ने विद्वानों के लिए एक ईसाई पादरी नियुक्त किये थे। अकबर ने विद्वानों के प्रति दयालुता का परिचय दिया। एक बंगाली कवि माधवाचार्य ने अकबर को 'चंदी मंगल' की उपाधि भी दी थी। उसने (अकबर) ने संस्कृत एवं हिन्दी के ग्रंथों के फारसी में अनुवाद कराये। 1582 ई. में महाभारत को फारसी भाषा में अनुवाद करने का आदेश दिया था। महाभारत के फारसी अनुवाद का नाम 'रज्मनामा' रखा गया था। अबुल कादिर बदायूँनी ने रामायण का फारसी में अनुवाद किया था। अकबर के आदेश से 'अथर्ववेद' का भी फारसी भाषा में अनुवाद किया गया था। आगरा के किले में अकबर का एक पुस्तकालय भी था। जो उसके शिक्षा प्रेम का प्रमाण था। पुस्तकालय के संबंध में म्ण्ठण् भ्अमसस ने वर्णन किया।[18] अनुवाद कार्य के अलावा अकबर ने पुस्तकों को आकर्षक बनाने के लिए उन्हें चित्रित भी करवाया था। जहॉगीर मुगल बादशाहों में शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति करने का प्रयास किया। इसका प्रमाण उसके द्वारा लिखी गई उसकी आत्मकथा 'तुज्के जहॉगीरी' ही है। उसका आदेश था कि यदि किसी धनी व्यक्ति

या यात्री की मृत्यु हो जाए और उसका कोई उत्तराधिकारी न हो, तो उसकी सम्पति को राज्य सरकार ले और उस धन को मदरसों के निर्माण और शिक्षा के विस्तार पर खर्च किया जाए।[19] शाहजहॉ ने शिक्षा को बढ़ावा देने के स्थान पर संगीत, चित्रकला और वास्तुकला में ज्यादा योगदान दिया। जिसकी प्रशंसा सर टामस रो एवं बर्नियर ने की।[20] औरंगजेब हिन्दू शिक्षा का समर्थक नहीं था। उसने केवल इस्लामी शिक्षा का ही विस्तार किया। गुजरात और अवध के पिछड़े प्रान्तों में शिक्षा प्रसार के लिए विशेष व्यवस्था की। 1678 ई. में गुजरात के बोहरा सम्प्रदाय की शिक्षा देने के लिए सरकार की तरफ से अध्यापकों की नियुक्ति की।[21]

शैक्षणिक संगठनः– मुस्लिम शासन के आरम्भिक युग में यवनों में शिक्षण संस्थाओं को नष्ट करने में कोई कमी नहीं छोड़ी। उन्होंने शिक्षकों – आचार्यो का कत्ल किया था। पुस्तकालय को जलाने जैसा जघन्य अपराध किया। भारत में प्राचीन काल से चली आ रही शिक्षण पद्धति अस्त–व्यस्त हो गई थी। इस्लामी शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों को वर्णमाला और धार्मिक प्रार्थना का ज्ञान कराना था। मुस्लिम काल में 03 प्रकार की शिक्षा संस्थाऍ थी, मकतब, मजिस्दों से लगे हुए विद्यालय ओर मदरसे। इनमें से प्रथम दो प्रकार की शिक्षण–संस्थाओं में प्राथमिक शिक्षा दी जाती थी। 'शेख अब्दुल हक मुहद्दिस' के अनुसार सिकंदर लोदी ने अरबिया, पर्शिया तथा मध्य एशिया से भी विद्वानों को आमंत्रित किया था। सिंकदर लोदी ने तो अपने सेनाधिकारियों को भी पढ़ना अनिवार्य कर दिया था। उच्च शिक्षा मुख्यतः दो भागों में विभाजित थी (1) धर्मनिरपेक्ष (2) धार्मिक। धर्मनिरपेक्ष विषयों में अरबी, व्याकरण, साहित्य, तर्कशास्त्र, विज्ञान, दर्शनशास्त्र, विज्ञान, इतिहास, गणित व ज्योतिष था।

शिक्षा के प्रमुख केन्द्र :– प्रारम्भिक शिक्षा मकतबों में दी जाती थी, जो गॉव, नगर और मुहल्ला के मसजिदों से संलग्न होते थे। देश के सभी भागों में मसजिदों का निर्माण हुआ। उच्च शिक्षा मदरसों में दी जाती थी, जो अधिकतर नगरों में थे। कोई नगर शिक्षा का एक महत्वपूर्ण केन्द्र बन सकता था। यदि वह मुस्लिम शासक की राजधानी हो या किसी जागीरदार, प्रशासक या विशिष्ट अमीर का निवास स्थान हो। धार्मिक महत्व के स्थान – दरगाह या खानकाह भी शिक्षा के केन्द्र बन गये। आगरा, इलाहाबाद, फतेहपुरसीकरी, दिल्ली, जौनपुर, लाहौर, अजमेर, पटना, लखनऊ, फिरोजाबाद, जालंधर, मुल्तान, बीजापुर, हैदराबाद, अहमदाबाद, इस्लामी शिक्षा के केन्द्र बनें। आगरा सिंकदर लोदी ने बसाया, जो आगे चलकर शिक्षा का प्रमुख केन्द्र बना। अरब, ईरान और बुखारा से बहुत से विद्वान यहॉ आये एवं राजकीय संरक्षण मिला।[22] अकबर के शासन काल में आगरा शिक्षा का प्रमुख केन्द्र बना।

इस्लामी शिक्षा ने धर्मनिरपेक्ष और धार्मिक शिक्षा में सामंजस्य स्थापित किया। इस्लाम दूसरे संसार के सिद्धान्त में विश्वास नहीं करता, इसलिए भौतिक और सांसारिक सुखों पर अधिक महत्व दिया। फिरोज तुगलक, अकबर और औरंगजेब ने व्यावहारिक शिक्षा पर अधिक बल दिया। प्रशासन के महत्वपूर्ण पदों पर योग्य व्यक्तियों की आवश्यकता थी। जो विद्यार्थी अपनी पढ़ाई पूरी कर लेते थे उनको योग्यतानुसार इन पदों पर रखा जाता था।[23] इस्लामी शिक्षा की ओर एक विशेषता यह थी कि साहित्य और इतिहास लेखन को प्रोत्साहन मिला। मुस्लिम शासकों में इतिहास को आत्मकथाओं, के रुप में लिखा और विशिष्ट इतिहासकारों को संरक्षण प्रदान किया। मुसलमान कला के पारखी थे, अतः उन्होंने गद्य, पद्य कथा–कविता को पाठ्य सूची में – सम्मिलित किया। इस्लामी शिक्षा के दोष का यदि आकलन करे तो इसमें भौतिकवाद पर अधिक बल दिया और अध्यात्मवाद की अवहेलना की गई। दूसरा मकतबों और मदरसों की शिक्षा अधिक समय तक सुचारु रुप से नहीं चल सकीं, ज्योहि आर्थिक संकट आता शिक्षा संस्थाऍ बंद हो जाती। इस्लामी शिक्षा में फारसी और अरबी भाषाओं की प्रधानता थी, जिसके कारण क्षेत्रीय भाषाओं का विकास न हो सका।

***व्याख्याता**

***राजकीय स्नातकोत्तर कला महाविद्यालय,**

दौसा

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:–

1. एफ.ई. कीथ, आफसिट पृ.107; ए. रशीद, सोसायटी एंड कल्चर इन मेडीवल इंडिया, कलकत्ता 1969, पृ. 150।
2. पी.एल. रावत, हिस्ट्री ऑफ इंडियन एजूकेशन, आगरा 1956, पृ. 84।
3. रेवर्टी, तबकाते नासिरी, 552; इलियट, जिल्द 2, पृ. 222–23 मौलवी अबुल हसनत नदवी।
4. युसुफ हुसैन, आफसिट पृ. 72।
5. युसुफ हुसैन, आफसिट पृ.73।
6. एस. एम. जाफर, एजूकेशन, पृ. 46।
7. तारीखे–ए–फिरोजशाही (इलियट) वॉल्यूम – तृतीय पृ. 235–36।
8. फरिश्ता, जिन्द 2, पृ. 369–70।
9. एन.एन.ला; इन गुलामों में 12 हजार गुलाम विद्वान, व्यापारी एवं कुशल कारीगर बनें।
10. बर्नी, 460।
11. रिजकुल्ला मुस्ताकी, वाकयोत मुश्ताफी, इलियट – 4, पृ. 45।
12. तुर्की भाषा का एक बहुमूल्य ग्रंथ है। इसकी तुलना सेंट आगस्टीन, रुसों, गिबन और न्यूटन की आत्मकथाओं से की जाती है। एडवर्ड और गैरेट, मुगल रुल इन इंडिया; पृ. 225।
13. एन.एन.ला, आपासिट, पृ. 225।
14. एडवर्डस् एंड गैरेट, आपासिट, पृ. 226; आईने अकबरी, ब्लॉकमैन पृ. 278।
15. अबुल फजल का कहना था कि यदि प्राचीन पुस्तके नष्ट हो गई हो, तो मीर फाथुल्ला शीराजी उसे फिर से पूर्ववत् कर देंगे। (युसुफ हुसैन, आपसिट, पृ. 84)
16. फादर मांसरेट अकबर के दरबार में 1580 से 1582 तक रहे।
17. "He was the first Muslim ruler of India to have noticed the stereotyped character of islamic institution in his country. The subject taught in Muslim Madarsa did not produce men with a breadth of vision and vide knowledge necessary for the citizen of a country like India, which was predominantly Hindu, Dr. A.L. Srivastava
18. E.B. Havell; Havel Book to Agra and the Taj Sikandara, (Fatehpur Sikri and neighborhood), P. 66.
19. एन.एन.ला, आपसिट, पृ. 174; एफ.ई. कीथ, आपसिट, पृ. 128।
20. बर्नियर टैवल्स, पृ. 254–255।
21. एफ.ई.कीथ, आपासिट, पृ.125।
22. एस.एम. जाफर, एजूकेशन, पृ. 57–58।
23. एस.एम. जाफर, एजूकेशन, पृ. 4।